अंतर वाहिनी

श्री बाबाजी शिवानंदा और उनके भक्तों के अनुभवों का उत्सव

अंतर वाहिनी, खुद से खुद की ओर, **भगवान श्री शिवानंदा बाबाजी** द्वारा **7 सितम्बर 2020** को शुरू किया गया था। संवादपत्र का नामकरण और शुरुआत दैवी के द्वारा नीचे दिए गऐ सन्देश के साथ हुआ था:

अंतर वाहिनी का अर्थ है और संदर्भित करता है उस ख़ुशी या आनंद की परम शक्ति को जो हमारे हृदय में बस्ती है और शरीर में बहती है। ये बहत ज़रूरी है की इंसान अंतर्मन की शांति की स्थिति में रहे ताकि वो इस शक्ति को पहचान सके ये कोशिश करते हुए की वो अंदर का अंधकार मिटा दे और रौशनी या प्रभा की तरफ बढे।

अंतर वाहिनी बाबाजी का जीवन और सन्देश जानने का एक बहुत ही प्रेम भरा आगे बढ़ने का कदम है और उस हर अनुभव के आनंद को जीने का जो बाबाजी के साथ जुड़ा है। ये एक शुरुआत और कदम है उस दिशा में हम सब के लिए आगे बढ़ने का।

मै आप सबको अपने साथ आगे ले जाना चाहता हूँ जैसे जैसे हम अंतर वाहिनी के इस सफर में आगे बढ़ते रहेंगे। मेरे दरवाज़े हर उस एक के लिए खुले हैं जो इस आनंद को जीना चाहता है और इस यात्रा का हिस्सा बनना चाहता है। मै अपनी शुभकामनाएं और आशीर्वाद आप सबको देता हूँ।

हम बधाई देते हैं अपने विश्व गुरु को, एक बहुत ही खुशहाल जन्मदिवस

इस विशेष संस्करण के द्वारा सभी पाठकों की ओर से और इस संवादपत्र के ज़रिये उत्सव मनाइये बाबाजी की ज़िन्दगी, अनुभवों, शिक्षाओं, उनका दिव्य प्रेम, और समस्त जीवित प्राणियों के लिए उनकी सरलता और उदारता का...

3 साल, 9 संस्करण, और 150 से ज़्यादा योगदान उनके आशीर्वाद, अनुग्रह और साहस के ज़रिये आए हैं हम सब के आगे बढ़ने के लिए। हम गुरु के लिए इस आनंद और कृतज्ञता को आपके साथ इस विशेष संस्करण के ज़रिये बाँटते हैं।

हम अपने समाज के सारे भाइयों और बहनों का शुक्रिया करते हैं जिन्होंने अपना समय और श्रम अंतर वाहिनी के लिए समर्पित किया है अपने व्यावहारिक यात्राओं से, रोमांचक पलों, और प्रेम भरे लेखनो से जिसने सबको प्रेरित किया है। हम अपने सारे पाठकों को बधाई देते हैं, बाबाजी की महिमा का आनंद लें, हमेशा हमेशा के लिए!

कृपया इस बहुत विशेष संस्करण का लुत्फ़ उठाएं जो आने वाले दसवें संस्करण का उत्सव मनाने के लिए सबकुछ **10** की संख्या में लाया है!

1

हमारे गुरु के जीवन को परिभाषित करते 10 क्षण

बाबाजी शिवानंदा की तरफ से, मधुरता से अपने बच्चों के लिए, बाबाजी के जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों का विचार

2

10 प्रभाव बाबाजी की शिक्षाओं से

भक्तों का बाबाजी शिवानंदा की दिव्य शिक्षाओं, उनका प्रभाव और अधिगम का मनन

3

प्रेम के 10 रंग

भक्त संक्षिप्त में अपने सत्य और प्रेम के अनुभव बाँटते है जो उन्होंने जीवन में बाबाजी शिवानंदा के साथ बिताए

4

बाबाजी की सरलता पर 10 काव्यात्मक पंक्तियाँ

एक भक्त का 10 पंक्तियों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा बाबाजी की सादगी और विनम्रता का प्रशंसन

1 हमारे गुरुदेव के जीवन को परिभाषित करने वाले 10 क्षण

बाबाजी अपने जीवन के अब तक के 10 महत्वपूर्ण क्षण अपने खुद के शब्दों और प्रेम से हमारे लिए बाँटते हैं। एक ही पल में अपने बच्चों के लिए इनको बांटना उनकी उदारता और प्रेम को बयां करता है! **कृतज्ञता से हम अपना प्रणाम अपने प्यारे गुरु श्री बाबाजी शिवानंदा को समर्पित करते हैं की उन्होंने हमे अपनी ज़िन्दगी में झाँकने का एक अवसर दिया**। अंतर वाहिनी विशेष संस्करण धन्य है आप तक इनको लाने के लिए, कृपया इनका आनंद उठाए..

1 मेरे जीवन का पहला पल, **जिस दिन मुझे अपने जीवित होने का एहसास हुआ! और वो तब हुआ जब मैंने अपने माता पिता को जाना**, अर्थात् अपने माता पिता को इस जीवन में अपना पहला गुरु मान कर मैं आगे बड़ा, सब से ज़रूरी मेरी माँ जिनकी सहनशीलता ने मुझे ये सिखाया, की जीवन में कुछ भी हो, ईश्वर की अनुभूति जीवन में तभी होगी, जब अपने भीतर सहन करने की शक्ति पैदा होगी!! मेरे जीवन में जीवन के अर्थ को समझने के लिए सब से पहला मेरा कदम माँ है! जिसने मुझे जन्म दिया!!

2 मेरे जीवन का दूसरा पल, जब से मैंने होश सँभाला, **मेरा बड़ा भाई** जिसको मैंने भगवान की पूजा करते देखा, और घर के इस माहौल को देख कर मेरे अंदर ईश्वर के प्रति आस्था जगी! **ये मेरे लिये आस्था का पहला कदम था! अध्यात्म की दुनिया से प्यार!!**

3 मेरे जीवन का तीसरा पल, जब मेरी कलास की सहपाठिका जो 9 कक्षा में गुज़र गई,और उसके अचानक गुज़र जाने से मेरे भीतर **एक लेखक ने जन्म लिया**, उसके जाने के ग़म में पहली बार मैंने उसी के ऊपर कविता लिखी, और उसके बाद मैं आज दिन तक लिखता ही गया, उसका जाना मेरे अंदर शब्दों का एक नया जन्म था!!

4 मेरे जीवन का चौथा पल, वो पल जब अचानक **मुझे ये एहसास होने लगा जैसे जीवन में कुछ बदलने बाला है**, और उस वक्त मैं दशवीं में पड़ता था,और ये एहसास बार बार मन में आने लगा था, पर ये मालूम नहीं था की होने क्या वाला है, बस एक ही एहसास था की सब बदलने वाला है!और 2005 में सब बदल गया!!

5 मेरे जीवन का पाँचवाँ पल ये वो पल था जब मेरे जीवन **में मेरे गुरु(भगवान श्री सत्य साईं बाबा) का प्रवेश हुआ,और मेरे जीवन में सब बदल गया**!! मेरे जीवन की हर अज्ञानता से दूर होने का मार्ग मेरे लिये खुल गया! सही या ग़लत दिशा के बारे में ज्ञान देने वाले गुरुदेव मेरे साथ थे!!

6 मेरे जीवन का छठा पल, जब **मेरे गुरुदेव ने मुझे 2006 मे पहली बार ध्यान के बारे में ज्ञान प्रदान किया, और अध्यात्म की दुनिया में ये मेरा पहला कदम था**, और वो अवसर था जब मैं आँख बंद करके अपने भीतर की गहराई को देख सकता था! और यही पल जिसने मेरे जीवन को पूरी तरह बदल डाला! मन के हर संशय को ख़त्म कर दिया!

7 मेरे जीवन का सातवाँ पल, मेरे जीवन की ये वो घटना है,जिसको मैं **समर्पण** का नाम देता हूँ!मैंने जब पहली बार अपने गुरु के आदेश से माँ दुर्गा की मूर्ति बनाई! जिसका ज्ञान मुझे पहले कभी था ही नहीं! बस ये घटना ने समर्पण क्या होता है वो सिखा दिया! उसके बाद मेरे भीतर मैं रहा ही नही! **सब ईश्वर की मर्ज़ी है यही सोच ने जन्म लिया!!**

8 मेरे जीवन का आठवाँ पल, जब मैंने लोगों के साथ कुछ अच्छे कुछ बुरे अनुभव पाये, लेकिन ख़राब अनुभवों से मैंने जो सीखा वो जीवन के अंत तक भुला नहीं जा सकता! और **उस अनुभव को मैं अपने जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा समझता हूँ**! मैंने सीखा हमको बस आगे बढ़ना है! ये अनुभव एक चलती हवा की तरह हैं! सुख हो दुख हमको हवा मे उड़ना नहीं है! उसी को जीवन मान कर रुकना नहीं है! बस हर अनुभव के पीछे की शिक्षा को पाना है और आगे जाना है!! और **चलते रहना बहुत ज़रूरी है! चलना ही अपना सच्चा अनुभव है!!**

9 मेरे जीवन का नौंवा पल, जब मैं अपने जीवन में **एक महान कलाकार से मिला 2007 मे, जिनका नाम रोबिन मालाकर था**! माँ दुर्गा की प्रतिमा के किसी विशेष कार्य की वजह से मैं उनसे मिला! और उनके साथ कुछ ही साल का मेरा सफ़र था! उसके बाद उन्होंने देह त्याग दिया! लेकिन ख़ुद पे विश्वास और ईश्वर पे विश्वास की ताक़त का दर्शन मैं केवल उनकी वजह से कर पाया! किसी के लिए मिटना क्या होता है बस एक प्रेम की ख़ातिर वो शिक्षा मुझे उनसे प्राप्त हुई!

10 मेरे जीवन का दसवाँ पल, मेरे जीवन में **निःस्वार्थ प्रेम अनुभव करवाया मेरे एक प्यारे कुत्ते ने**!! उसका नाम था लड्डू! सच्ची भक्ति और निस्वार्थ प्रेम रोशनी उसने दिखाई!! जिसका प्रेम मुझे जीवन में प्रेम कैसे करना चाहिए! प्रेम में लुट जाना क्या होता है! सच्चा प्रेम होता क्या है। ये मुझे वो बच्चा सिखा कर गया!!और उसका प्रेम मेरे लिए एक प्रेरणा है! जिसकी वजह से मेरे भीतर प्रेम का ये सागर कभी ख़त्म नहीं होगा!! **उसका प्रेम मेरे दिल में हमेशा सबके लिए प्रेम बन कर उवरता ही रहेगा**!!

वैसे तो जीवन का हर एक पल आपको एक नई शिक्षा देता है! हर कदम एक नया अनुभव है!! मैंने ये अनुभव करते करते 2011 मे आत्मासाक्षात्कार पाया!! **हमारी हर एक सांस हमारे लिए शिक्षा है!** हम ये तभी देख सकते हैं! जब हम अपनी सारी ऊर्जा और दृष्टि को अपने ऊपर लगाते हैं!!क्योंकि जब तक ख़ुद के होने का अनुभव नही होता! तब तक हमारा मन शांत नहीं हो सकता! जीते जी ये शून्य का दर्शन है!! **मरने के बाद मोक्ष की बात सब करते हैं! मैं कह सकता हूँ! ये जीवित रहते हुए मोक्ष का दर्शन है! मोक्ष में जीना है!!!**

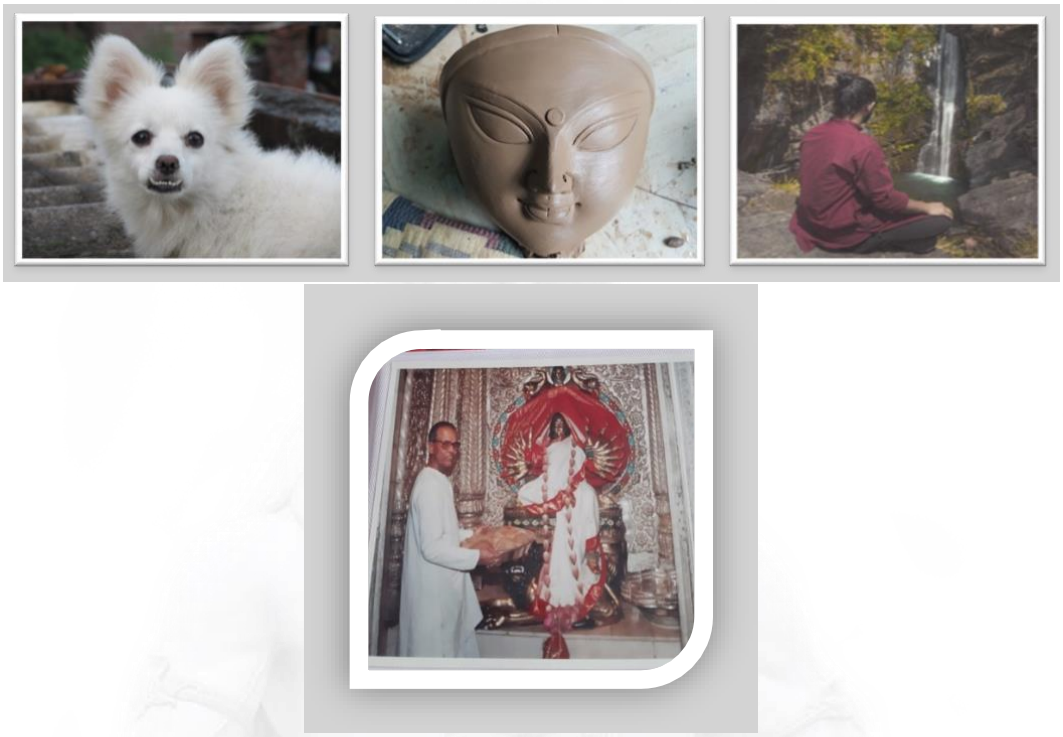

2 10 प्रभाव बाबाजी की शिक्षाओं से

भक्तों के बाबाजी शिवानंदा के दिव्य शिक्षाएं और आचरण से सीखे हुए विचारों का संग्रह

प्रभाव 1 कोंचिता द्वारा लिखित (ग्रनादा, स्पेन)

प्रिय आत्मस्वयम, नीचे मै लिखती हूँ की बाबाजी के संदेशों ने मुझे किस प्रकार छुआ है।

तुम्हारी आखिरी सांस तुम्हे छोड़ जाए उससे पहले उठ जाओ। उस समाधी, उस उच्चतर चेतना या उच्चतर स्वः को महसूस करने की कम से कम थोड़ी सी चेष्टा करो इससे पहले की तुम्हारी आखिरी सांस तुम्हे छोड़ जाए! तुम्हे एक हीरे की खदान में भेजा गया है पर तुम यहाँ खोए हुए हो बेकार के पत्थर और कंकड़ के मोहित आनंद के ग्रहण में। तुम जंगली हंस के पीछे भाग कर खो रहे हो और एक दिन तुम्हे सूचना मिलेगी की तुम्हारा समय समाप्त हो गया! - बाबाजी

जब भी मै बाबाजी का सन्देश पढ़ती हूँ वो और भी गहरा और स्पष्ट हो जाता है। जब भी मै बिखर जाती हूँ और अपना केंद्र खो देती हूँ तब मै इस सन्देश को याद करती हूँ। मै वापस आ जाती हूँ अपने दिल की तरफ, अपने खुद की तरफ, अपने हीरा दिल की तरफ। मुझे मेरी ख़ुशी फिर से मिल जाती है।

प्रेम के साथ
उनके कमल चरणों में

प्रभाव 2 बालाजी परसुरामन द्वारा लिखित (स्विस)

31.07.2016 सन्देश:

बाबाजी स्वयं शिव है। अनुभव और स्वीकार करो। उनकी इच्छा के आगे समर्पण करो। उनकी भक्ति में डूब जाओ जिस भी चीज़ की ज़रूरत हो वो और उससे कहीं ज्यादा मिलेगा।

समर्पण ही मेरा उद्देश्य है जैसा बाबाजी ने खुद चुना है। जो मेरे लिए निर्धारित है वो पूरा करने के लिए मै इस रास्ते पर चल रहा हूँ।

प्रभाव 3 रूपक कल्याणी द्वारा लिखित

बाबाजी ने बहुत समय पहले, करीब 2012 में, मुझे बताया था:

"माया से दूर रहो"। आने वाला समय माया से भरा हुआ है, हमेशा भगवान से प्रार्थना करो की कृपा करके मुझे माया से दूर रखें।

इस चीज़ ने मुझे भीतर तक छुआ। उस समय तो मै इसका मतलब नहीं समझ सका पर अब मुझे इसका महत्व समझ में आता है.. हर तरह की माया जो हमारे आस पास हो रही है उससे दूरी बनाना बहत जरुरी है और अपने कर्मों, और ख्यालों पे ध्यान देना बहत जरुरी है। और उनकी ये सोच, उनके ये शब्द मुझे शांत रहने में मदद करते हैं और जो भी हमारे आस पास अव्यवस्था हो रही है उसमे ध्यान रखना सिखाते हैं।

प्रभाव 4 राहुल द्वारा लिखित (यूएसए)

बाबाजी के कई भक्त पूरी दुनिया में फैले हुए हैं, उनके अद्वितीय शिक्षण शैली को अनुभव कर रहे हैं जब वह उनके सवाल, चिंताओं को सम्बोधित करते हैं और एक सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। अप्रैल की एक रात्रि को मै

अपने जीवन के चुनौतीपूर्ण दौर से गुज़र रहा था, हर काम को टाल रहा था। सुबह 12 (ईएसटी) बजे बाबाजी का मैसेज एक दम से मेरे फ़ोन पे आया। लिखा था,

"हर पल तुम खुद से झूठ बोल रहे हो, तुम्हे पता है तुम बहुत कुछ कल के लिए टाल रहे हो, जो तुम तब बिलकुल भी नहीं करोगे! वो करो जो तुम सच में करना चाहते हो, वो मत करो जो तुम नहीं करना चाहते! पर अपने आप को भ्रम की स्थिति में डाल कर मत जियो! नहीं तो, तुम अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर डालोगे!"

इस सन्देश ने मुझे हैरान कर दिया, "क्या बाबाजी मुझे देख रहे हैं?" इसने मुझे जगा दिया, मुझे काम करने के लिए और चीज़ों को सुलझाने के लिए प्रेरित किया इसके बजाय की मै काम टाल कर और भी खराबी करूँ।

अगले दिन मै एक नयी शक्ति के साथ उठा। मैंने काम करने की एक सूची बनाई और समय पे करने के लिए उनको जरुरत दी। इस प्रक्रिया के दौरान मुझे बाबाजी का एक और सन्देश याद आया 11 जनवरी सुबह 9:37 (ईएसटी) बजे का, जिसमे लिखा है,

"ये एक छोटा सा जीवन है, जोखिम उठाओ, जुआरी बनो। तुम क्या खो सकते हो? हम खाली हाथ आते हैं, खाली हाथ जाएंगे। खोने को कुछ भी नहीं है। थोड़ा सा समय है खेलने के लिए, एक सुन्दर गीत गाने के लिए, और समय निकल जाता है। हर पल कितना कीमती है! जय विश्व!! भोले बाबा!!"

बाबाजी हमे याद दिलाते हैं की हम अपना डर और संकोच का त्याग करें क्यूंकि इस भव्य योजना में खोने के लिए कुछ भी नहीं है। इस ज्ञान को अपना कर, मैंने अपने सारे डर को आगे से सामना किया, न ही सिर्फ रोके हुए कार्यों को ख़त्म किया जिनको ख़त्म करने में मै हिचकिचाता था बल्कि सहजता से जीत को भी हासिल किया।

बाबाजी सार्वलौकिक प्रेम और ज्ञान को अपनाते हैं, आपका खुद के और दुनिया के साथ एक गहरा सम्बन्ध जोड़ते हैं। इन शिक्षाओं से, हर कोई स्वयं की खोज की परिवर्तनकारी यात्रा पर निकल सकता है और एक अर्थपूर्ण और संतुष्ट अस्तित्व बना सकता है।

प्रभाव 5 रोजा कथिरा (चिराला, भारत)

"प्रेम संबंध नहीं, प्रेम स्वभाव है!"

"Love is not a relationship, Love is our true nature!" - Babaji

हमारे प्यारे गुरु बाबाजी के साथ में मेरा सबसे गहरा अनुभव है - की वह मुझे एक प्रेम में रहने वाले जीव में बदल रहे हैं। बाबाजी का प्रेम दिव्य है और इस प्रेम ने मुझे कुछ इस प्रकार छुआ की मै भी इस प्रेम को उसी तरह से प्रदान करना चाहती थी। इस प्रक्रिया में मैंने हृदय से प्रेम करना सीखा जो की सांसारिक प्रेम से विभिन्न है। जैसे मैंने खुद को उनसे ज्यादा प्रेम करते हुए पाया, मैंने जाना की "प्रेम" धीरे धीरे मेरी प्रकृति बन गया। मै जाने अनजाने में सब से प्यार करने लगी जिसके भी संपर्क में आई जैसे पेड़, लोग, आसमान, हवा, जल। ये सब मुझे आनंद देने लगे। मै अपना सबसे सुन्दर आत्मविकास अनुभव कर रही हूँ केवल उनके नाम स्मरण में रह कर (निरंतर स्मरण) जो उन्ही के द्वारा संभव हो पाया है।

बाबाजी के कमल चरणों में प्रणाम है जो की शिव के स्वरुप हैं - जो हमे इस यात्रा पर ले कर जा रहे हैं शिवानंदम की ओर।

प्रभाव 6 श्रीनिवास कल्याणी द्वारा लिखित (काँगड़ा)

बाबाजी ने हमेशा अपने गुरु पर भरोसा रखने पर बल दिया है। तरीकों का कोई अंत नहीं हैं जिनसे बाबाजी आप की परीक्षा लेते हैं (ओह आपका उनके द्वारा परीक्षा होगी ये पक्की बात है)। मेरे जीवन के सबसे मुश्किल

समय में भी जिस चीज़ ने मुझे बल दिया है वो है बाबाजी के ऊपर मेरी श्रद्धा। मै दृढ़ता से मानता हूँ की बाबाजी ही मेरा जीवन चला रहे हैं। हर सांस जो मै लेता हूँ, हर धड़कन जो मै महसूस करता हूँ, और हर दिन जो मै जीवित हूँ उन्ही का आशीर्वाद है। मेरी ज़िन्दगी में जो भी अच्छा बुरा होता है वो बाबाजी का ही आशीर्वाद है। मेरे लिए सिर्फ इस तथ्य को मान लेना ही उनपे भरोसा रखने का ज़रूरी हिस्सा है। यह मुझे मुश्किल घड़ी में खड़े रहने के लिए बल देता है।

अगर श्रद्धा को एक पात्र में रक्खा जाए तो बेहतर है की वो पूरा भरा हो क्यूंकि अगर कम हुआ तो थोड़ा ही हिलाने से छलक जाएगा।

प्रभाव 7 चंद्रशेखर द्वारा लिखित (मुंबई)

ॐ नमः शिवाय

प्राचीन काल से ही अवतार और आध्यात्मिक गुरु मानव रूप में आते रहे हैं जब जब इंसान के सामूहिक विवेक को एक बड़ी शुरुआत की ज़रूरत पड़ी है, जब भी वह स्वार्थ और उससे जुड़ी हर बुराई की वजह से भ्रष्ट हुआ है। अब तक जो भी गुरु प्रकट हुए हैं, उनमे से हमारे भोले बाबा श्री शिवानंदा बाबाजी अपने आसान पहुँच और गहरे अर्थ की वजह से सबसे अलग हैं। जब मैंने उनकी जड़ों को हैड़ाखान बाबाजी की पुनर्जन्म में जाना जो खुद हैराखान बाबाजी के पुनर्जन्म थे मेरी ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं था क्यूंकि मैंने पहले हैड़ाखान बाबाजी का आश्रम का दौर किया था और उनके बारे में पढ़ा था।

बाबाजी समाज का सदस्य होने की वजह से मै उनके दिव्य सन्देश को प्राप्त कर पाता हूँ जिनमे किसी को भी बदलने की शक्ति होती है जिनको बाबाजी का आशीर्वाद प्राप्त है और अपने वर्तमान अवस्था को पार करके उनको उच्च आध्यात्मिक अवस्था में पहुँचने की मदद मिलती है। जाहिर तौर पर सन्देश संक्षिप्त हैं पर गहरे हैं और सीधा निशाने पे वार करते हैं।

वास्तव में उनके सन्देश इंसान के हृदय को शांति से आकार देते हैं अगर कोई पढ़ने के बाद सिर्फ उनके बारे में सोचे, जो की इन संदेशों का परम उद्देश्य है।

एक समय तक पढ़ने के बाद मैंने सीखा की भले ही सारे संदेशों के प्रसंग अलग है पर आध्यात्मिक अंतर्धारा समान है। किसी को भी उनकी शक्ति को महसूस करने के लिए पहले उन्हें अनुभव करना होगा। उनके संदेशों ने खुद ही आध्यात्मिक उपलब्धियों के बारे में मेरा दृष्टिकोण बदल दिया है। उन्होंने अपने संदेशों और आचरण के ज़रिये ये साबित किया है की एक सच्चे आध्यात्मिक गुरु की कसौटी सादगी है। एक साधित गुरु अपने आध्यात्मिक क्षेत्र में हिमालय के समान उपलब्धियों के बावजूद बहुत सरल और सर्वत्र सुगम होते हैं। और इसलिए वह हर किसी से अलग होते हैं।

साथ ही बाबाजी को देखते हुए मैंने ये सीखा की अगर एक गुरु अपनी अंदरूनी शक्ति को किसी मकसद के लिए जगाएं तो वह इस सीमित दुनिया से तुरंत ही पृथक हो जाते हैं और सर्वे शक्तिशाली सार्वभौमिक चेतना के साथ जुड़ जाते हैं। फिर कोई हैरानी नहीं रह जाती जब एक के बाद एक चमत्कार होते हैं।

हर दिन हम अनुभव करते हैं उन नियमों को जो पदार्थ को नियंत्रित करते हैं जिससे हमारी दुनिया बनी है। जैसे की गुरुत्वाकर्षण, गति के नियम वगैरह। आध्यात्मिक गुरु साथ ही में ऊर्जा के नियमों को भी नियंत्रित करते होंगे। ऊर्जा और पदार्थ जो की आपस में सम्बंधित हैं, ऊर्जा 'प्रयोजन' को ले कर चलती है और साथ में होते हैं गुरु जिनको कहा जाता है 'संकल्प' और ये प्रदान करते हैं उन सौभाग्यशाली लोगों को वस्तु रूप में वो सब सामान जो सांसारिक भी है। बहुत लोग जो की ऐसे पलों में बाबाजी के साथ होते हैं जब बाबाजी सार्वभौमिक चेतना के साथ एक समाधी जैसी स्तिथि में जुड़े होते हैं, उन लोगों ने वस्तुओं को हवा से मूर्त रूप धारण करते हुए देखा है। मै निजी रूप से ये मानता हूँ की ये सब उस अनदेखी दिव्य शक्ति से होता है जो की परमात्मा की इस इच्छा से भरपूर है की चीज़ों को भौतिक स्वरुप में लाया जाये। भौतिक जवाहरात और मोति वगैरह जो की बाबाजी की इच्छा शक्ति से कभी भी उत्पन्न हो सकते हैं, उनसे ज्यादा मै मोहित होता हूँ उनके उन सरल संदेशों से जो की हृदय को प्रेरित कर सकते हैं और किसी दिन दुनिया को आध्यात्मिक तरीके से बदल सकते हैं, अपनी ढेर सारे प्रेम से और शांतिपूर्ण बना सकते हैं जो आज की दुनिया में हर किसी की प्रार्थना का विषय होना चाहिए।

बाबाजी के चरण कमलों में प्रणाम

प्रभाव 8 अश्विन पंडित द्वारा लिखित (बैंगलोर)

बाबाजी ने हाल ही में कहा था, "तुम्हारे लिए ये भी जानना ज़रूरी है की दुनिया तुम्हारे बिना भी चलती है!"

मैने यह महसूस किया की ये अत्यंत दिल को छू लेने वाला उद्धरण है जो हमारे अंतर्मन को अच्छे से झकझोर सकता है, उम्मीद है !

ऐसा लगता है बाबाजी हम सब भक्तों को इस्पे कार्य करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। आखिरकार, अहंकार रहित स्थिति ही हम सब की साधना का परम उद्देश्य है। लेकिन हमारा ज़िद्दी अहंकार ये बर्दाश्त नहीं करता और इसलिए बाबाजी का हम सबको इस्पे कार्य करने के लिए बोलना और भी गंभीर है। कहने को ये प्याज़ की परतों को खोलने जैसा है।

हम सबको इस्पे थोड़ा थोड़ा कार्य करना होगा, शब्द दर शब्द, या वाक्य दर वाक्य धीरे धीरे ही सही लेकिन जरूर अहंकार का ये भार हमे उतारना ही होगा। अगर हम इस कार्य में बाबाजी के सुनहरे शब्दों का प्रयोग करते हुए सफल रहे तब हम खुद को भाग्यशाली मान सकते हैं जब हम उस स्थिति से उत्पन्न हुई परम शांति को महसूस करेंगे।

अब तक मुझे हलका महसूस होता है जैसे मै इसको कोशिश करता हूँ और अपनी ज़िन्दगी में धीरे धीरे उतारता हूँ। मुझे ये मालूम होता है की अगर पहले से तुलना करें तो मै खुदको गुस्से की और बेसब्री की स्थिति में जाने से रोक पा रहा हूँ। मै आशा करता हूँ की जो कदम आध्यात्म में आगे बढ़ने के लिए हमारे लिए बने हैं उनपे मै चढ़ता जाऊं। मै आशा कर रहा हूँ की खुद के लिए महीने या सप्ताह के लक्ष्य रखूं ताकि पर्याप्त सुधार दिखे।

इसलिए आइये भक्तों हम सब प्रतिज्ञा लेते हैं की इस भार को दिन पर दिन, धीरे धीरे ख़त्म करेंगे !

जय विश्व ! भोले बाबा की जय !

प्रभाव 9 मेर द्वारा लिखित (मेड्रिड, स्पेन)

"तुम सब ने अपनी कमियां प्रेम और श्रद्धा से मुझे समर्पित कर दी है। मै सिर्फ एक चीज़ कहना चाहता हूँ। सारे डर को मिटा दो। तुमने अपना काम कर दिया है। अब गुरु की बारी, तुम्हारी सब कमियों को दूर करने की और तुम्हे सत्य की दृष्टि देने की। तुम्हे सिर्फ अपने गुरु के शब्दों पे हर वक़्त भरोसा रखना है। मै वादा करता हूँ तुम्हारे रास्ते में आने वाली सारी मुश्किलों और समस्याओं से बचा लूंगा। मेरा जीवन का उद्देश्य तुम्हे तुम्हारे खुद से मिलाने का है। मै हमेशा तुम्हारी रक्षा करूँगा - जय विश्व - बाबाजी !!

ॐ नमः शाम्भवे

वो प्रेम हैं, वो रक्षक हैं, वो मेरे प्यारे गुरु हैं

मै कभी भी इस सन्देश को नहीं भूलती हूँ। पहले ही पल से और जब भी मै ये सन्देश पड़ती हूँ मेरी श्रद्धा अनंत में गुणा हो जाती है, अनंत में। भरोसे का रास्ता इस सन्देश और मेरे गुरूजी से स्थिर रहता है।

मै जानती हूँ वो हमेशा मुझे अपने साथ जीवन देंगे, मेरी तब तक मदद करेंगे जब तक मै खुद को पा न लूँ ; और फिर उसके बाद मै उनके साथ जारी रखूंगी; और फिर उसके बाद मै भी सबकी मदद कर सकुंगी।

जय विश्व

प्रभाव 10 कार्मेला द्वारा लिखित (ग्रनादा, स्पेन)

वो तुम्हारा समय था, मै जानता हूँ,
तुम्हे जाने देना मेरा दिल तोड़ रहा है
मै तुम्हारा दर्द तुम्हारी आँखों में देख सकता था
मेरा प्रेम अब तुम्हारे लिए प्रेम है
जो अब तुम्हे उड़ने में मदद करेगा !

तुम्हारे लिए मेरी यादें कभी ख़त्म नहीं होंगी !
जब मेरा समय आएगा, मै तुम्हे फिर से देखूंगा !
अभी के लिए अलविदा, आज से हमारी ज़िन्दगी अलग है !
लेकिन भले ही ज़िन्दगी हमे अलग कर दे, तुम मेरे दिल का हिस्सा बन गए हो !
मै जानता हूँ तुम किसी रूप में वापस आओगे !
तुम्हारे लिए मेरा प्यार मेरे दिल में हमेशा के लिए जीवित है !
मै तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ, मेरे बच्चे भोला ! ❤❤
बाबाजी

बाबाजी के लिए मेरी कृतज्ञता और प्रेम जो की असंभव प्रतीत होता था, उनकी पिछली यात्रा के बाद एक पहले जैसे ना सोची गई सुगंध के साथ और भी बढ़ और खिल गया है; उनका सब के लिए त्याग, दुनिया के भले और सुख के लिए, हम सब के भीतर की रौशनी जगाने के लिए, समाज के सदस्य और मानवता के लिए, इन मुश्किल समय में, मेरी बुनियादों को छू लिया है।

पहले से निर्धारित उनका उनके कुत्ते के साथ मिलन और उसका अर्थ जो सिर्फ बाबाजी जानते हैं, मेरे लिए एक कोमलता, करुणा, और प्रेम की निशानी बन गया है; मै अभी भी उसकी याद को महसूस करती हूँ की कैसे भोला ने अपना दर्द समेट कर बाबाजी का अनुसरण किया। मुझे भोला से प्रेम है क्यूंकि उसने हमें यह मौका दिया की हम प्रेम के इतने सुन्दर शब्दों को पढ़ सकें जो हमारे प्यारे बाबाजी की तरफ से अपने बच्चे के लिए उनके भाव को बयां करता है।

भोला को प्यार। मोमो तुम्हारा स्वागत है! आपको हमेशा प्यार मेरे भोले बाबा। प्रणाम।

कार्मेला

3 प्रेम के 10 रंग

हमारे प्यारे गुरु के प्यार ने भक्तों के हृदय में प्रेम की चिंगारी को खिला दिया है, उन सब के द्वारा सुंदरता से और संक्षिप्त में व्यक्त किया जाता है।

प्रेम का रंग हर्षा धीमान द्वारा लिखित (दिल्ली)

अपने **क्षमादान** के कृत्य के ज़रिये बाबाजी के प्रेम ने मेरे जीवन को छूआ है। मैंने बाबाजी को आसानी से व्यक्ति को क्षमा करते हुए देखा है इस चीज़ से बेपरवाह की उसको अपनी गलती का अहसास हो या ना हो। इसके अतिरिक्त, बाबाजी के भीतर एक गुण है की वह गहरे प्रेम से बोले हुए एक ही शब्द से पिघल जाते हैं। आप उन्हें 'बाबाजी' बुलाएं, वह आपके हो जाते हैं; आप उन्हें 'माँ' बुलाएं, वह आपकी तरफ दौड़े चले आते हैं; आप उन्हें 'भैया' बुलाएं, वह आपके सच्चे मित्र बन जाते हैं; मै उन्हें 'बाबा' बुलाती हूँ, और वह मुझे एक पूरा, अंतहीन प्रेम का सागर अपनी गहरी, बालक के सामान, भोली आँखों में दिखा देते हैं।

अपने बच्चों की पीड़ा में वो खुद को दुःख देते हैं। वो कहते हैं, "मेरे पास प्रेम और सिर्फ प्रेम है। एक बार मै तुम्हे अपने जीवन में बुला लूँ, तो मै सम्पूर्ण तरीके से तुम्हारा बन जाता हूँ इस बात से बेपरवाह की तुम मुझे अपनाते हो या नहीं"। क्षमा करना उनके पास स्वाभाविक रूप से आता है। एक बार उन्होंने मुझे कहा था, "अगर तुम गलतियां नहीं करोगे तो सही रास्ते को कैसे देख पाओगे? ये सब तुम्हारी ज़िन्दगी का एक चरण है। ज़रूरी ये है की तुम आज पे ध्यान दो। अपनी गलती मान लेना ही काफी है। खुद से प्रेम करो, हमेशा।"

एक महत्वपूर्ण सीख जो मुझे मिली है वो ये है की अपने क्षमादान के ज़रिये उन्होंने हमेशा मुझे ये याद दिलाया है की 'खुद को भी क्षमा करो'। उन्होंने मुझे 'औरों को क्षमा' करने का भी याद दिलाया है क्यूंकि अगर बाबाजी जैसे महान गुरु आसानी से क्षमा कर सकते हैं तो हम भी कर सकते हैं। ये एक सीख है की भगवान और गुरु का प्रेम अनंत है और हम खुशकिस्मत है की ऐसा जीवन मिला है जहाँ हम ये अनुभव कर सकते हैं। शुक्रिया मेरे परमप्रिय बाबाजी अपने जीवन में मुझे हिस्सा देने के लिए और अपना अनंत प्रेम और ढेर सारे आशीर्वाद को अनुभव कराने के लिए।

प्रेम का रंग मैरी द्वारा लिखित (फ्रांस)

ॐ नमः शाम्भवे

मै बाबाजी से पहली बार पिछले साल **(2022) 22** सितम्बर को मिली थी।

मुझे याद है जब हम उनके घर आए वह बाहर बैठ कर मूर्तियां साफ़ कर रहे थे। बाबाजी ने एक नारंगी रंग की टी शर्ट पहनी थी, वो चमक रहे थे और हमें देख कर बेहद खुश थे, मैंने इतना प्रेम महसूस किया और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मै अपने घर में हूँ। काँगड़ा आने से पहले भी मै बाबाजी का प्रेम महसूस कर पाती थी। उनके बारे में सबसे पहले मैंने एक साईं मित्र से सुना था जिसने मुझे यूट्यूब पर कैलाश की वीडियो भेजी थी, उसको देख कर मेरे आंसूं बहने लगे थे और मेरा हृदय प्रेम से चमक उठा था। ऐसा लग रहा था जैसे मै उन्हें पहले से जानती थी। काँगड़ा में वह हमारा इस प्रकार ध्यान रख रहे थे जैसे हम उनके बच्चे हों। मै बहत आभारी हूँ की मै बाबाजी से मिली और दुर्गा पूजा में उनके साथ होना बहुत अच्छा था। मेरे लिए वह नया था और हमारी यूरोपियन देशों से

विभिन्न था और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मै पहले से जानती हूँ और बाबाजी ने विनम्रता से सब कुछ समझाया। शुक्रिया बाबाजी मेरे प्यारे गुरु।

प्रेम का रंग सरोजिनी द्वारा लिखित (मुंबई)

बाबाजी हर किसी को विभिन्न रंगों में दिखते हैं। पर उनका सच्चा रंग प्रेम और सिर्फ प्रेम है। वह जो भी कहते हैं, करते हैं, विशुद्ध रूप से सिर्फ हम सब के लिए उनके प्रेम की वजह से है।

हमारे लिए बाबाजी हमारे सच्चे मित्र, एक प्यारे भाई, हमारे गुरु हैं, और जैसे हर बार की तरह वह कहते हैं, हमारी दयालु दिव्य माँ हैं।

हम सबके साथ उनके रिश्ते से ज्यादा, मै प्रेरित हुई हूँ उनके बोलने के तरीके से, और उनके सबके साथ स्वाभाव से। उनकी विनयशीलता, विनम्रता, और देवी माँ के लिए भक्ति अद्वितिय और तुलना से परे है। वह हमेशा प्रेम से भरपूर रहते हैं।

जानवरों को लेकर उनका प्रेम भरपूर है जो हम सब ने हाल ही में भोलू के लिए देखा था।

आजकल कोई भी अपने परिवार वालों के लिए या आसपास के लोगों के लिए परवाह नहीं करता। और बाबाजी भोलू का पूरे तरीके से ध्यान रख रहे थे जब वो बीमार था और जीवन के लिए संघर्ष कर रहा था। बाबाजी हमेशा अपने सरल शब्दों और हर दिन की गतिविधियों के ज़रिये बहुत सी चीज़ें समझाने का प्रयत्न करते हैं।

संक्षिप्त में बाबाजी सत्य प्रेम की मूरत हैं।

प्रेम का रंग रुक्मिणी द्वारा लिखित (मुंबई)

ॐ नमः शाम्भवे

"भगवान का प्रेम समुद्र की तरह है। आप शुरुआत तो देख सकते हैं लेकिन अंत नहीं।"

हमारे बाबाजी का प्रेम ऐसा है। मुझे सौभाग्य मिला बाबाजी के साथ होने का और उनका प्रेम प्राप्त करने का जिसने मेरी ज़िन्दगी बदल दी। मै एक बेहतर इंसान में परिवर्तित हुई हूँ और मैंने उनसे बहत कुछ सीखा है। उनके निस्वार्थ प्रेम ने मुझे सबसे प्रेम और सबकी सेवा करना सिखाया है। बाबाजी के अमृत सामान शब्द हमे जीवन में सांत्वना और शांति देते हैं। अब वह हमेशा मेरे साथ हैं। मै हमेशा उनके साथ होने की इच्छा करती हूँ।

मै जीवन को लेकर और भी सकारात्मक हो गई हूँ और समझती हूँ की मेरे जीवन के उद्देश्य क्या हैं। उन्होंने मुझे हर इंसान और जीव के प्रति सब्र, दया और बिना किसी अपेक्षा के प्रेम करना सिखाया है।

मै पूर्ण तरीके से समर्पण करती हूँ और पूरी श्रद्धा रखती हूँ और हमारे प्यारे भोले बाबा हमारे अपने बाबाजी से और भी प्रेम के लिए प्रार्थना करती हूँ।

"भगवान के प्रेम से ज़्यादा कुछ भी और शुद्ध नहीं है। उनका प्रेम दयालु और बिना किसी अपेक्षा के है। वह हमेशा आपके लिए खड़े हैं जिस प्रकार कोई और नहीं होता। आपको सिर्फ उनकी उपस्थिति पे श्रद्धा रखनी है।"

प्रेम का रंग अदिति धीमान द्वारा लिखित (काँगड़ा)

बाबाजी के साथ के अनुभव अविस्मरणीय है और साथ ही में उनकी शिक्षाएं भी। मेरे लिए बाबाजी प्रेम के प्रतीक हैं। उनका एक पहलू जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद है वो है उनका पशुओं को लेकर प्रेम। कभी कभी ऐसा लगता है की वो पशुओं की पीड़ा को अच्छे से महसूस कर लेते हैं और कभी ऐसा लगता है की वह उनकी बोली को भी समझ पाते हैं। बाबाजी को पशुओं से बात करना प्रिय है। मैंने उन्हें कई दफा गायें, पिल्ले, कुत्ते, चिड़ियाँ, और ना जाने कितने और से बातें करते हुए देखा है। जिस तरह से वह पशुओं को खाना खिलाते हैं वह एक माँ का अपने बच्चे को पोषण करने जैसा प्रतीत होता है। ये एक ऐसी प्रवृत्ति है जिसका अनुसरण हमें भी अपनी ज़िन्दगी में करना चाहिए।

प्रेम का रंग पोषना शर्मा द्वारा लिखित (दिल्ली)

बाबाजी मेरे लिए प्रेम और परम शांति का शुद्ध स्वरुप हैं। एक सच्चे गुरु की तरह वह अपने शिष्यों का हाथ थामे रखते हैं और उन्हें ज़िन्दगी की हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करते हैं। बाबाजी बुद्धि का मानवीकरण हैं क्यूंकि वह गहरे ज्ञान को एक बहुत ही सरल और आसान तरीके में अनुवाद करते हैं। बाबाजी के साथ ने मेरे जीवन के दृष्टिकोण को धर्म, आस्था और साहसी पथ में बदल दिया है।

एक सच्चे गुरु या शिक्षक पहले से ही साबित की हुई चीज़ों को नहीं पढ़ाते, वो यह कोशिश करते हैं की जन्म से सीखी हुई चीज़ों को आप भूल जाओ और अपने खुद का आध्यात्मिक रास्ता ढूंढने के

लिए मार्ग दिखाते हैं। बाबाजी हमेशा कहते हैं "गुरु का काम आपके जीवन में सत्य की झलक दिखाना है - शिक्षण नहीं, बल्कि जाग्रति। गुरु शिक्षक नहीं ! गुरु जाग्रति है!

अपने सत्य स्वरुप को जानने से सम्बंधित मै अपना एक छोटा सा अनुभव बांटना चाहती हूँ। मै और मेरा परिवार बाबाजी से 2012 में मिला और 2008 में मुझे एक त्वचा सम्बन्धी रोग हुआ जिसको ठीक करना कठिन है और 2012 तक उसकी वजह से मै सामाजिक रूप से पृथक रहती थी और मेरी मानसिक स्वास्थ पे भी असर पढता था।

फिर एक दिन बाबाजी ने मुझे कुछ ध्यान तकनीकों के बारे में बताया जिसकी मदद से मै अपने रोग से ठीक हो सकती थी। उन्होंने मुझे मेरे रोग को खुद ठीक करने के लिए कहा एक ध्यान तकनीक के द्वारा जिसमे मुझे ये सोचना है की मै जल्दी ठीक हो जाउंगी और ठीक पांच महीने बाद मेरा त्वचा रोग गायब हो गया और मैंने दुनिया का सामना करने के लिए अपना आत्मविश्वास और अंतर मन की शांति को दोबारा हासिल किया।

प्रेम का रंग हेम ढोलकीआ द्वारा लिखित (कनाडा)

|| ॐ नमः शाम्भवे ||

गुरु कृपा केवलं

इन तीन संस्कृत शब्दों का जब अनुवाद करें तो बनता है - 'केवल गुरु की कृपा'। इससे कोई फर्क नहीं पढ़ता की हम आध्यात्म, ज्ञानोदय, या जीवन के मतलब को ले कर क्या विचार करते हैं (अपने मन में), सत्य तो यही है की सब कुछ सिर्फ गुरु की कृपा से ही पूरा होता है।

बाबाजी से पहली बार 2019 में काठमांडू, नेपाल में मिलने के बाद मेरी ज़िन्दगी पूरी तरीके से बदल गई है। और अब जब वो परिस्थितियाँ विचित्र लगती हैं जिनकी वजह से पहली मुलाकात हुई थी, आज मै जानता हूँ की ये उनकी ही इच्छा थी। उसी पल से, मेरी ज़िन्दगी पूरी तरह से बदल चुकी है।

मेरी ज़िन्दगी का हर आयोजन, हर पल चाहे बढ़ा या छोटा उन्ही के आशीर्वाद से हुआ है। उनके अनुग्रह के अनदेखे लेकिन अनमिट निशान सुबह की रौशनी जैसे साफ़ है। अपने प्रिय व्यक्ति को स्वस्थ करने के लिए छोटी सी प्रार्थना, कनाडा में स्थानांतरित होना, या बाबाजी में शिरडी साई का प्रतिबिम्ब दिखना, उन्ही का अनुग्रह है। अनुभव या चमत्कार ज़रूरी नहीं है। जरुरी ये है की हम ये समझे की ये सब उस हमेशा के लिए मौजूद अनुग्रह को स्मरण रखने के लिए है और हमारे अहंकार को हटाने के लिए है ताकि हम उनके चरण कमल की तरफ थोड़ा सा और समर्पण करें।

मेरी और आपकी ज़िन्दगी में प्रारब्ध की वजह से दुःख और सुख तो आता रहेगा। ये अनिवार्य है। वह (दुःख और सुख) कितना आए ये उसकी कृपा से है। और धैर्य, ऐसी स्थितियों से लड़ने की शक्ति भी गुरु कृपा से आती है। इसलिए, असल में किसी भी चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं है - चाहे वो अतीत का कर्म हो, आज की परिस्थिति, या एक अनजाना भविष्य।

ध्यान रखें, सिर्फ **गुरु की कृपा** से ही सब कुछ मुमकिन है - चाहे वह सांसारिक हो या फिर आध्यात्मिक।

मन उनके कमल चरणों पे समर्पित करना चाहता है। और दिल कहता है, (सच्ची) श्रद्धा सिर्फ गुरु की कृपा से होगी। कोई कुछ नहीं कर सकता है, सिवाय इसके की उस अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए खुद को खोलें और खाली करें। बाकि सब, गुरु की कृपा से हासिल हो जाएगा।

सबसे प्यारे बाबाजी के कमल चरणों पे मेरी विनम्र श्रद्धांजलि !

गुरु कृपा केवलं

प्रेम का रंग हिमा राजू द्वारा लिखित (कनाडा)

आत्मा शक्ति, अंतर्मन की रौशनी।

बाबाजी के बारे में कोई क्या लिख सकता है, एक सध्गुरु जो खुद ही प्रतीक हैं निस्वार्थ प्रेम' के। जब मुझे बोला गया की बाबाजी के प्रेम का रंग एक विभिन्न रंगों के कैनवास पे उनके प्रेम के विभिन्न भावों को व्यक्त करने के लिए उतारना है, तब मैंने सबसे गहरा रंग उठाया जो उनकी आत्मा के भीतर चित्र को दर्शाता है। ये है जीवन का रंग, स्वयं का रंग, उनकी भीतर आकृति, रूपरेखा, जो उनके निस्वार्थ प्रेम के झरने से निकलती है जो उनकी आध्यात्मिक शक्ति है।

बाबाजी की शक्ति जो मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करती है वो है उनका 'कभी हर मत मानो' की मनोदृष्टि, चाहे जीवन की यात्रा कितनी भी चुनौतीपूर्ण या जटिल क्यों न हो। इसी सोच के साथ, मै हाल ही में हुई 'आदि कैलाश' की यात्रा पर चल पड़ी, मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्रा जिसने मेरी सोच बदल दी की 'हार न मानो' के दृष्टिकोण से आप कुछ भी मुमकिन कर सकते हैं।

वह हमेशा ये दोहराते हैं की आत्मा की सच्ची शक्ति आत्मा की आज़ादी में है। मन की शांति और शरीर की स्थिरता से मन और शरीर की ज़ंजीरों से खुद को आज़ाद करना जो परिवर्तित हो जाता है आत्मा की आज़ादी में। आखिर में मै एक मुहावरा कहना चाहूंगी जो दर्शाता है बाबाजी के प्रेम के भाव को, हर आत्मा की भीतर शक्ति को, जो की उन्ही के निस्वार्थ प्रेम से सबके लिए बह रही है। 'जहाँ चाह, वहां राह'

"ॐ नमः शाम्भवे"

प्रेम का रंग शिरीषा द्वारा लिखित (ऑस्ट्रेलिया)

जिस दिन से मैंने बाबाजी को जाना है उस दिन से प्रेम के अनुभव ने अनेक आयामों में सिर्फ विस्तार देखा है और लगातार बेशर्त ये बढ़ता जा रहा है। उसी शुरुआत से मै जानती थी की मैंने मेरे भगवान को देखा है। मुझे क्या पता था की "भगवान ही प्रेम है और सबकुछ है", शायद मै पहले उन्हें इच्छाओं की पूर्ती करने वाला ही समझती थी! तब से लेकर अब तक भगवान ने सिर्फ मेरी मदद ही की है उनको मित्र, पिता, माता, गुरु, सब कुछ, और मेरी श्रद्धा के रूप में देखने में।

हे भगवान, आपकी हर परीक्षा ने ही मुझे ये अवसर दिया है की मै आपके अनुग्रह के हर कृत्य की सराहना करूँ, समझूँ की मै कुछ भी नहीं हूँ, और जानूं की सिर्फ आप ही मेरी श्रद्धा और ताकत हैं। प्यारे भगवान, आप हर पल मेरी आँखें खोलते हैं ये जानने के लिए की "शर्तरहित" क्या है और जब भी मै रास्ते से विमुख होती हूँ तब मुझे स्मरण कराते हैं। आपका मेरे लिए और मेरे साथ मेरी गति के अनुसार प्रेम, प्रयास, और धैर्य असीम है।

आपने मुझे ये सीखने में मदद की है की सारे रास्ते एक ही मंज़िल तक जाते हैं और मुझे खुद को आज़ाद करने का और इस सफर का आनंद लेने का मौका दिया है। ये अनुभव और प्रेम की वर्षा है जो आपने मेरे ऊपर की है जिसने मेरी यात्रा को रोशन कर दिया है।

ये आपका ही प्रेम है जिसने मुझ जैसे अज्ञानी का उद्धार मेरे जीवन का उद्देश्य जानने के लिए किया है। आपने मुझे ज्ञान के आवेग से ऊर्जित किया है, उतना ही जितना मै संभाल पाऊं, जिसने मेरे अंदर एक नए जीवन को जन्म दिया है जिसपर मै आगे बढ़ सकूँ।

आपने मुझे हौंसला दिया है सिर्फ बैठने का और विचारों को बहने देने का और आज आप जारी रखते हैं मेरा पोषण और अनुमति देते हैं इस बैठने की स्तिथि का, होने का, और आपकी उपस्तिथि का आनंद लेने का।

आपने मुझे ढेर सारे अवसर दिए हैं अपनी कमियों को जानने का, अपने स्वार्थी विचारों को पहचानने का, अपने विश्वास को चुनौती देने का, सीखते रहने का, विश्वास में बढ़ने का, और समर्पण में एक कदम आगे बढ़ने का।

अपने अनुभवों और यात्रा को बाँट कर आप मुझे प्रेरित करते हैं और मुझे आगे बढ़ने के लिए आत्मविश्वास मिलता है। छोटे से लेकर बढ़ी स्थितियों तक आप मेरे साथ रहे हैं और आगे बढ़ने के लिए साहस दिया है।

आपके व्यवहार और मीठे शब्दों ने मेरे दिल को समानुभूति दी है और मेरे मन का उत्थान किया है हर वक़्त जब भी मै आपकी शरण में आई हूँ।

आप मुझे सब कुछ स्वीकार करने में मदद करते हैं। आपके शब्द जो कहते है "अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए स्वार्थी हो जाओ" मेरे से सम्बंधित रहते हैं, मुझे चुभते हैं और मुझे नींद से जगाते हैं।

काफी समय लगा मुझे निर्वाण षटकम् से ये शब्द को अपनाने में "गुरुर्नैव शिष्य:", पर आपने मुझे इसमें भी काबू पाने की शक्ति दी है।

केवल आपका ख्याल ही मेरी ख़ुशी और मेरी इच्छा है। आपको दिल, विचारों, शब्दों, कार्यों में देखने की इच्छा संतुष्ट करती है।

मै सोचती थी की इस पुरे समय मेरे पास आपके लिए प्रेम था पर माँ के लिए आपका प्रेम देख कर मैंने ये जाना है "मेरे पास प्रेम नहीं है", इन सालों में मैंने कुछ नहीं सीखा और अगर मै अभी भी आपके हृदय में हूँ तो ये सिर्फ आपका आशीर्वाद और प्रेम है।

मै पूछती हूँ की क्या है जो आपका प्रेम नहीं है और एक सन्नाटा छा जाता है! चिदानन्द रूपः शिवोहम् शिवोहम् !

प्रेम का रंग सुदर्शना द्वारा लिखित (दिल्ली)

बाबाजी का रंग जिसने मुझे गहराई तक छुआ है वो है उनकी बच्चे के सामान मासूमियत। मै बाबाजी को उनके बचपन से जानती हूँ और वह अपने आध्यात्मिक परिवर्तन के बाद भी वैसे ही विनम्र, सरल, और भोले रहे हैं। मै खुद को सोचने से रोक नहीं पाती की उनकी मासूमियत और सरलता हमेशा जो भी उनके द्वार तक आते हैं उनको प्रेम और सर्वोत्तम सलाह देने में केंद्रित रहती है। उनके आध्यात्मिक परिवर्तन ने उनके सबसे सच्चे गुणों को और भी बड़ा दिया है जो है - उनका भोलापन और प्रेम। उनके मन में किसी के लिए कभी भी द्वेष की भावना नहीं होती है। वह प्रेम से भरपूर हैं और जब वह मुस्कुराते हैं तो एक छोटे बच्चे की तरह प्रतीत होते हैं। मेरे प्यारे भोले बाबा शिवानंदा बाबाजी को प्रणाम !!

4 10 काव्यात्मक पंक्तियाँ बाबाजी के वर्णन में

वीणा दातार द्वारा लिखित

क्या लिखू,कैसे लिखू

एक रुह को शब्दो का ,"साज श्रृंगार" कैसे करू
उस उच्चतम को देखा है मैने घर मे विचरण करते हुए
जिनके शब्दो मे है मिठास और आचरण मे विश्वास
सोचती हू भगवान ऐसे कैसे सामान्य इंसान जैसे

कान्हा भी तो ऐसा रहता होगा। सरलता का मंत्र पढाता होगा
गोपगोपियों का साथ निभाता होगा। " प्रिय भोला" बनता होगा।

एक पवित्र रुह ने धारण किया एक शरीर को।
उस शरीर ने धारण किया एक "अंतर्मुख" मन को
जो सिखाता है हमे" सहजता ही सुंदरता है"
और "मानवता ही मधुरता "

What to write? How to write?
How to decorate that, "Supreme Soul," In words?

I have seen that Supreme Soul walking in the house.
Whose words are nectarine, and who is a confidant in conduct.
I wonder, how is this God? Just a human being!

Kanha might have lived like him.
Might be preaching a mantra of “Simplicity,"
Must be with the loving Gopi’s and Gopika’s
Must be becoming "Priya Bhola" to every heart.

That supreme soul has adorned the “Human Body”
That human body has adorned, the “Inner Mind"
That inner mind teaches us, “Simplicity is Beauty"
And humanity is "Nectarine Love"

हमें संपर्क करें | प्रतिक्रिया

कृपया हमारे मिशन, गतिविधियां, या फिर इस परिवर्तनकारी मिशन में आप कैसे भाग ले सकते हैं, ये जानने के लिए हमें संपर्क करें (reach out to us)। कृपया संवादपत्र के ऊपर किसी प्रतिक्रिया या आर्टिकल्स प्रस्तुत करने के लिए भी आप हमें लिख सकते हैं।